गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

भाषा संकाय,हिन्दी विभाग
बी.ए. (स्नातक) हिन्दी

सेमेस्टरवार सी.बी.सी.एस.
(Choice Based Credit System)
पाठ्यक्रम

जून, 2018 से लागू

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए. हिन्दी स्नातक पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम	अवधि	सीटें(इन्टेक)
बी.ए. (हिन्दी) (स्नातक)	3 वर्ष (6 सेमेस्टर)	45

पाठ्यक्रम का ढाँचा

बी.ए. (स्नातक) मुख्य विषय हिन्दी

प्रथम सेमेस्टर	क्रेडिट	अध्यापन (Contact Hours)	अंक
HIN-CC- 103 हिन्दी भाषा व्यवहार (आवश्यक)	4	60	100
MJRHIN –101. प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-I	4	60	100
	04	60	100
द्वितीय सेमेसेटर			
MJRHIN –201. हिन्दी नाट्य साहित्य-I	4	60	100
MJRHIN-202 हिन्दी कथासाहित्य-I	4	60	100
	08	120	200
तृतीय सेमेस्टर			
MJRHIN-301 छायावादोत्तर काव्य-I	4	60	100
MJRHIN-302 हिन्दी साहित्य का इतिहास-I	4	60	100
MJRHIN- 303.प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-II	4	60	100
	12	180	300
चतुर्थ सेमेस्टर			
MJRHIN-401 छायावादोत्तर काव्य-II	4	60	100

MJRHIN-402 हिन्दी कथासाहित्य-II	4	60	100
MJRHIN-403 हिन्दी साहित्य का इतिहास-II	4	60	100
MJRHIN- 404. हिन्दी नाट्य साहित्य-II	4	60	100
	16	**240**	**400**

पंचम सेमेस्टर

MJRHIN-501.हिन्दी साहित्य का आधुनिककाल-I	4	60	100
MJRHIN-502साहित्य के सिध्दांत और हिन्दी आलोचना-I	4	60	100
MJRHIN-503.विशेष साहित्यकार-भीष्म साहनी-I	4	60	100
MJRHIN-504.प्रयोजनमूलक हिंदी-I (वैकल्पिक)	4	60	100
MJRHIN-504.हिन्दी पत्रकारिता-I (वैकल्पिक)	4	60	100
MJRHIN-505.प्रादेशिक भाषा साहित्य-I	4	60	100
	20	**300**	**500**

षष्ठ सेमेस्टर

MJRHIN-601.हिन्दी साहित्य का आधुनिककाल-II	4	60	100
MJRHIN-602.साहित्य के सिध्दांत और हिन्दी आलोचना-II	4	60	100
MJRHIN-603.विशेष साहित्यकार-भीष्म साहनी-II	4	60	100
MJRHIN-604.प्रयोजनमूलक हिन्दी-II (वैकल्पिक)	4	60	100
MJRHIN-604.हिन्दी पत्रकारिता-II (वैकल्पिक)	4	60	100
MJRHIN-605.प्रादेशिक भाषा साहित्य-II	4	60	100
	20	**300**	**500**

बीस अनिवार्य प्रश्नपत्र के क्रेडिट	**80**	**2000**
कुल क्रेडिट	**80**	**2000**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-1

MJRHIN-101.प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

मध्यकालीन काव्य में भक्ति काव्य जहाँ लोकजागरण को स्वर देनेवाला है, वहीं रीतिकाल अपने लौकिक-श्रृंगारिक परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को अच्छी तरह से अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व, काव्यरूपता, लौकिकता, पारलौकिकता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन आवश्यक है। इस प्रश्नपत्र में प्रथम सत्र में कबीर, सूरदास और तुलसीदास तथा द्वितीय सत्र में रहीम, बिहारी और मीरा पर विशेष परिचय प्राप्त करके मध्यकालीन कवियों की जानकारी प्राप्त कराना मुख्य उद्देश्य है।

इकाई -1 हिन्दी साहित्य का काल-विभाजन

1.1 प्राचीन कालः परिस्थितियाँ और प्रवृत्तियाँ

1.2 भक्तिकालः परिस्थितियाँ और प्रवृत्तियाँ

1.3 भक्तिकाल की विभिन्न धाराओं का परिचय एवं कवि

1.4 प्रमुख कविः कबीर, सूरदास, तुलसीदास, रहीम, बिहारी, मीरा..

इकाई -2 कबीर: जीवन परिचय–निर्गुण काव्यधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा-काव्य प्रवृत्तियाँ काव्य-सौन्दर्य-साखियाँ और दोहे (संलग्न सूची के अनुसार)

इकाई -3 सूरदास : जीवन परिचय–सगुण भक्त कवि-कृष्ण भक्ति शाखा-काव्य प्रवृत्तियाँ भावसौंदर्य-पद (ससंदर्भ व्याख्या हेतु सूची संलग्न)

इकाई -4 तुलसीदास : जीवन परिचय-सगुण भक्त कवि-राम भक्ति शाखा-काव्य प्रवृत्तियाँ भावसौंदर्य-दोहे तथा पद (ससंदर्भ व्याख्या हेतु सूची संलग्न)

इकाई -5 स्वाध्याय एवं परिसंवाद।

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **मध्यकालीन हिन्दी काव्य (सं.) शिवकुमार मिश्र, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद**
2. **कबीर, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली**
3. **हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि, डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, विनोद प्रकाशन, आगरा**
4. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**
5. **हिन्दी साहित्य का सुबोघ इतिहास, बाबू गुलाबराय, पुस्तक प्रकाशन, आगरा**
6. **कबीर मीमांसा, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**
7. **सूरदास और उनका काव्य, डॉ. मैनेजर पांडे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली**
8. **हिन्दी आलोचना और डॉ. रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली**
9. **प्राचीन हिन्दी कविता, संपादकः डॉ.अम्बाशंकर नागर, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।**
10. **गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी**
11. **सूरदास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी**
12. **कबीर के कुछ आलोचक, डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली**
13. **कबीर बाज भी, कपोत भी और पपीहा भी, डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली**
14. **कबीर- प्रकाशन- साहित्य अकादमी, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली**
15. **सूरदास, साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली**
16. **तुलसीदास, साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-2

MJRHIN-201.हिन्दी नाट्य साहित्य-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

साहित्य में जितना महत्त्व पद्य का है, उतना ही गद्य साहित्य का भी है। आधुनिक काल में जहाँ कविता के क्षेत्र में कई मोड़ आए वहीं गद्य के क्षेत्र में विभिन्न नई विधाओं का विकास भी हुआ। नाटक और कहानी के क्षेत्र में कविता की ही भाँति कई मोड़ आए। नाटक दृश्य और श्रव्य दोनों का आस्वाद एक ही साथ कराता है, इसलिए 'काव्येषु नाटकम् रम्यम्' कहा है। भारतेन्दु से प्रारंभ होकर नाट्य विधा नए आयामों को छूते हुए आज जिस मुकाम पर है उसका अध्ययन जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार हेतु सर्वथा अपेक्षित है।

इकाई -1 1.1 हिन्दी का नाट्य साहित्य (सामान्य परिचय)
- 1.1 नाटक : अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या
- 1.2 नाटक के तत्व
- 1.3 नाटक, रंगमंच और अभिनेयता

1.2 नाटक का विकास
- 1.2.1 भारतेन्दु काल
- 1.2.2 प्रसाद काल
- 1.2.3 प्रसादोत्तर काल

1.3 प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों की विशेषताएँ

इकाई -2 2.1 जगदीशचन्द्र माथुर का 'कोणार्क'
- 2.1.1 कोणार्क का कथ्य
- 2.1.2 पात्र
- 2.1.3 कथ्यगत विशेषताएँ

2.2 कोणार्क का शिल्प विधान
- 2.2.1 भाषा शैली
- 2.2.2 रंगमंचीयता

इकाई -3 सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और 'बकरी' नाटक

3.1 सक्सेना का परिचय

3.2 सक्सेना और उनके समकालीन नाटककार

इकाई -4 लोकनाट्य

4.1 अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

4.2 लोकनाट्य परंपरा

4.3 लोकनाटक के तत्व

इकाई -5 5.1 लोकनाट्य 'बकरी'

1.1 बकरी का कथ्य

1.2 पात्रालेखन

1.3 वस्तुगत विशेषताएँ

5.2 बकरी का शिल्प-विधान

2.1 भाषा

2.2 रंगमंचीयता

2.3 प्रतीकात्मकता

2.4 व्यंग्य

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी नाटक, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य, रामजन्म शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. समकालीन हिन्दी नाटककार, गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी नाटक और रंगमंच : पहचान और परख, इन्द्रनाथ मदान
5. समसामयिक हिन्दी नाटकों में चरित्र सृष्टि, जयदेव तनेजा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
6. नाट्यभाषा, गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
7. रंगदर्शन, नेमिचंद्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. हिन्दी एकांकी, सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. एकांकी और एकांकीकार, रामचरण महेन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-2

MJRHIN-202.हिन्दी कथासाहित्य-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

कथा साहित्य के बारे में छात्रों को विधिवत् एवं व्यापक जानकारी प्राप्त हो, इस उद्देश्य से हिंदी उपन्यास एवं कहानी विधा को रखा गया है।

इकाई -1 हिन्दी का उपन्यास साहित्य

- **1.1 उपन्यास का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा**
- **1.2 उपन्यास के तत्व**
- **1.3 उपन्यास का उद्भव और विकास**
- **1.4 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास की विशेषताएँ**

इकाई -2 प्रेमचंद और गबन

- **2.1 प्रेमचंद और समकालीन उपन्यासकार**
- **2.2 गबन की कथावस्तु**
- **2.3 पात्र परिचय एवं विशेषताएँ**
- **2.4 संवाद कला, देशकाल वातावरण**
- **2.5 शिल्प, भाषा एवं शैली**
- **2.6 उद्देश्य-संवेदना**
- **2.7 प्रमुख समस्याएँ**

इकाई -3 हिन्दी कहानी साहित्य

- **3.1 कहानी : अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा**
- **3.2 कहानी के तत्व**
- **3.3 हिन्दी कहानी की विकास यात्रा**
- **3.4 हिन्दी कहानी के तत्वः (कथावस्तु, पात्र अथवा चरित्र-चित्रण, संवाद-कला,परिवेश,भाषा-शैली तथा उद्देश्य)**

इकाई -4 4.1 पठित कहानियाँ एवं कहानीकारः-

1. सवासेर गेंहूँ- प्रेमचंद
2. डाची- उपेन्द्रनाथ अश्क
3. अकेली- मन्नू भंडारी
4. उसकी रोटी- मोहन राकेश

4.2 कहानियों का शीर्षक एवं कथ्य

4.3 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

4.4 कहानी की कथ्यगत विशेषताएँ

4.5 दलित चेतना, व्यंग्य, नारी भावना, आधुनिकता

4.6 समस्याएँ

इकाई -5 कहानियों का शिल्पविधान

5.1 कहानियों की भाषा

5.2 कहानियों की शैली

5.3 कहानियों की तात्विक समीक्षा

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. काव्य के रूप, बाबू गुलाबराय
2. मोहन राकेश : प्रतिनिधि कहानियाँ, (सं.) मोहन गुप्त
3. हिन्दी उपन्यास : एक अनंतयात्रा, (सं.) अशोक वाजपेयी
4. उपन्यास : स्थिति और गति, डॉ. चंद्रकान्त बांदिवडेकर
5. हिन्दी उपन्यास और यर्थादवाद, डॉ. त्रिभुवन सिंह
6. मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, प्रा. उमा केवलराम
7. साठोत्तर हिन्दी उपन्यास और नगरबोध, डॉ. प्रिया नायक
8. प्रेमचंद एवं समकालीन भारतीय उपन्यासकार, डॉ. श्रीमती कलावती
9. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, विवेकी राय
10. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य (कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास), इन्द्रनाथ मदान
11. हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य जीवन, डॉ. उर्मिला भटनागर
12. प्रेमचंद (सं.) सत्येन्द्र
13. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प, डॉ. शोभा बेरेकर
14. हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष (सं.) रामदरश मिश्र
15. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति, देवीशंकर अवस्थी
16. कुछ कहानियाँ : कुछ विचार, विश्वनाथ त्रिपाठी

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-3

MJRHIN-301.छायावादोत्तर काव्य-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

आधुनिक हिन्दी कविता की लगभग डेढ़ सौ वर्ष की लंबी विकास यात्रा को किसी एक प्रश्नपत्र में समेट पाना व्यावहारिक दृष्टि से उचित नहीं है। अत: छायावाद तक के काव्य विकास को एक प्रश्नपत्र में बाँटना अनिवार्य है। छायावाद के बाद वैसे भी कविता क्षेत्र में कई आयाम जुडे; यथा - प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता। अत:इन वादों के प्रमुख कवियों तथा उनकी कविताओं को छायावादोत्तर काव्य में शामिल किया जा रहा है जिससे विद्यार्थी कविता के दौर में आए प्रत्येक मोड़ और तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत हो सके।

इकाई -1 1.1 आधुनिक हिन्दी कविता
- 1.1 आधुनिक हिन्दी कविता के विविध वाद
- 1.2 छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ
- 1.3 प्रमुख कवि

1.2 छायावादोत्तर काव्य
- 1.1.1 युगीन परिस्थितियाँ
- 1.1.2 प्रगतिवाद से अभिप्राय
- 1.1.3 प्रमुख प्रवृतियाँ और कवि

इकाई -2 हरिवंशराय बच्चन
- 2.1.1 कवि परिचय
- 2.1.2 कविताएँ
- 2.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -3 नागार्जुन
- 3.1.1 कवि परिचय
- 3.1.2 कविताएँ
- 3.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -4 केदारनाथ अग्रवाल

4.1.1 कवि परिचय

4.1.2 कविताएँ

4.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -5 भवानीप्रसाद मिश्र

5.1.1 कवि परिचय

5.1.2 कविताएँ

5.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **हिन्दी कविता : तीन दशक, डॉ. रामदरश मिश्र**
2. **अज्ञेय : एक अध्ययन, डॉ. भोलाभाई पटेल**
3. **धूमिल और परवर्ती जनवादी कविता, डॉ. श्रीराम त्रिपाठी**
4. **नया काव्य : नये मूल्य, डॉ. ललित शुक्ल**
5. **समकालीन कविता, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**
6. **शब्द और मनुष्य, डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव**
7. **आधुनिक हिन्दी काव्य का स्वरूप और विकास, डॉ.आशा किशोर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**
8. **नागार्जुन : एक अध्ययन, डॉ. ललित अरोडा**
9. **स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता, डॉ. अनंत मिश्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली**
10. **नया हिन्दी काव्य, डॉ. शिवकुमार मिश्र**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-3

MJRHIN-302.हिन्दी साहित्य का इतिहास-1

(आदिकाल, भक्तिकाल)

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विभिन्न कालों, युगों, विचारधाराओं, वादों, शाखाओं आदि से छात्र सुपरिचित हों, इस उद्देश्य से हिंदी साहित्य के इतिहास के आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल को पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इकाई -1 हिन्दी साहित्य का आदिकाल

- **1.1 आदिकाल की विभिन्न परिस्थितियाः नामकरण, प्रमुख कवि एवं ग्रंथ**
- **1.2 आदिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ**
- **1.3 प्रमुख रचनाकार - चंदबरदाई, अमीर खुसरो, विद्यापति**
- **1.4 पृथ्वीराज रासो का संक्षिप्त परिचय**

इकाई -2 हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल

- **2.1 भक्तिकाल का उद्भव और विकास**
- **2.2 भक्तिकाल की विभिन्न परिस्थितियाँ**
- **2.3 भक्तिधारा की शाखाओँ का परिचय**

इकाई -3 निर्गुण धारा

- **3.1 निर्गुण धारा की शाखाएँ और प्रमुख कवि**
- **3.2 ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी शाखा की काव्यगत प्रवृत्तियाँ**
- **3.3 कबीरः काव्यगत विशेषताएँ**
- **3.4 जायसी और उनका पद्मावत**
- **3.5 पद्मावत की काव्यगत विशेषताएँ**

इकाई -4 सगुण घारा

- **4.1 सगुण धारा की शाखाएँ और प्रमुख कवि**
- **4.2 रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति शाखा की काव्यगत प्रवृत्तियाँ**

4.3 तुलसीदास और उनका रामचरितमानस - परिचय

4.4 सूरदास और उनकी काव्यगत प्रवृत्तियाँ तथा विशेषताएँ

4.5 अष्टछाप के कवियों का परिचय

इकाई -5 स्वाध्याय एवं परिसंवाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र**
2. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, बाबू गुलाबराय**
3. **हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपतिचंद्र गुप्त**
4. **बिहारी सार्धशती, ओमप्रकाश**
5. **हिन्दी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी**
6. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, श्यामचंद्र कपूर**
7. **हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी**
8. **हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा**
9. **हिन्दी साहित्य : युग एवं प्रवृत्तियाँ, डॉ. विजयपाल सिंह**
10. **हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, राजनाथ शर्मा**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-3

MJRHIN-303.प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

प्राचीन से तात्पर्य है - आदिकाल और मध्यकाल। सही अर्थ में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास आदिकाल से शुरू होता है। इसमें धार्मिक तथा ऐहिक दो प्रकार का साहित्य मिलता है, जो प्रबंध, मुक्तक, रासो, फागु, चरित, सुभाषित आदि विविध काव्यरूपों में अभिव्यंजित है। मध्यकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में इसे प्रतिस्थापित किया जाता है।

मध्यकालीन काव्य में भक्ति काव्य जहाँ लोकजागरण को स्वर देनेवाला है, वहीं रीतिकाल अपने लौकिक-श्रृंगारिक परिदृश्य में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों को अच्छी तरह से अभिव्यंजित करता है। अतः भाषा, संस्कृति, विचार, मानवता, काव्यत्व, काव्यरूपता, लौकिकता, पारलौकिकता आदि दृष्टियों से इसका अध्ययन आवश्यक है। इस प्रश्नपत्र में द्वितीय सत्र में रहीम, बिहारी और मीरा पर विशेष परिचय प्राप्त करके मध्यकालीन कवियों की जानकारी प्राप्त कराना मुख्य उद्देश्य है।

इकाई -1 रहीम : जीवन एवं कृतित्व परिचय, रहीम के दोहे-
(दोहों की सूची संलग्न)
1.1 दोहों की ससंदर्भ व्याख्या-
1.2 रहीम के दोहों की विशेषताएँ

इकाई -2 बिहारी
1.1 बिहारी- जीवन एवं कृतित्व परिचय
1.2 बिहारी के दोहे (संलग्न सूची के अनुसार)
1.3 दोहों की संदर्भ सहित व्याख्या
1.4 बिहारीः बहुज्ञ कवि (काव्यगत विशेषताएँ)

इकाई -3 मीरा
1.1 मीरा : जीवन एवं कृतित्व परिचय

1.2 मीरा की भक्ति का स्वरूप

1.3 पदों की संदर्भ सहित व्याख्या

1.4 मीरा की काव्यगत विशेषताएँ

1.5 मीरा की भक्ति-भावना

इकाई -4 स्वाध्याय एवं परिसंवाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **'हे मराल को मानसर, एकै ठोर रहीम' पुस्तक में से, (सं.) प्राणनाथ पंकज, रूपा एण्ड कंपनी, नई दिल्ली**
2. **बिहारी एवं मीरा के दोहे, मध्यकालीन हिन्दी काव्य- पुस्तक में से, शिवकुमार मिश्र, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद**
3. **ये रहीम दर-दर फिरहि (रहीम दोहावली), (संपादन एवं व्याख्या) डॉ. श्रीकांत उपाध्याय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली**
4. **हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, बाबू गुलाबराय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता, आगरा**
5. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**
6. **मीराबाई (सं.) ललिता प्रसाद शुक्ल, हिन्दी साहित्य संमेलन, प्रयाग**
7. **मीरा का काव्य, डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली**
8. **रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, डॉ. बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**
9. **बिहारी वाग्विभूति, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र**
10. **हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1-2, (सं.) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी**
11. **सन्त साहित्य कोश (सं.) श्री रमेशचंद्र मिश्र**
12. **रहीम (सं.) साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली**
13. **बिहारी (सं.) साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली**
14. **मीरा (सं.) साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिंदी सेमेस्टर-4

MJRHIN-401.छायावादोत्तर काव्य-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

आधुनिक हिन्दी कविता की लगभग डेढ़ सौ वर्ष की लंबी विकास यात्रा को किसी एक प्रश्नपत्र में समेट पाना व्यावहारिक दृष्टि से उचित नहीं है। अत: छायावाद तक के काव्य विकास को एक प्रश्नपत्र में बाँटना अनिवार्य है। छायावाद के बाद वैसे भी कविता क्षेत्र में कई आयाम जुडे; यथा - प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता। अत: इन वादों के प्रमुख कवियों तथा उनकी कविताओं को छायावादोत्तर काव्य में शामिल किया जा रहा है जिससे विद्यार्थी कविता के दौर में आए प्रत्येक मोड़ और तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत हो सकें।

इकाई -1 प्रयोगवाद, नई कविता तथा समकालीन कविता से अभिप्राय

- **1.1 प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ**
- **1.2 प्रयोगवाद की शिल्पगत विशेषताएँ**
- **1.3 प्रयोगवाद और नई कविता**
- **1.4 नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ**
- **1.5 नई कविता की शिल्पगत विशेषताएँ**
- **1.6 नई कविता और समकालीन कविता**
- **1.7 समकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ**
- **1.8 समकालीन कविता की शिल्पगत विशेषताएँ**

इकाई -2 2.1 अज्ञेय

- **2.1.1 कवि परिचय**
- **2.1.2 कविताएँ**
- **2.1.3 काव्यगत विशेषताएँ**

इकाई -3 3.1 दुष्यंत कुमार

- **3.1.1 कवि परिचय**
- **3.1.2 चुने हुए शेर**
- **3.1.3 काव्यगत विशेषताएँ**

इकाई -4 4.1 सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

4.1.1 कवि परिचय

4.1.2 कविताएँ

4.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -5 5.1 धूमिल

5.1.1 कवि परिचय

5.1.2 कविताएँ

5.1.3 काव्यगत विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **हिन्दी कविता : तीन दशक, डॉ. रामदरश मिश्र**
2. **अज्ञेय : एक अध्ययन, डॉ. भोलाभाई पटेल**
3. **धूमिल और परवर्ती जनवादी कविता, डॉ. श्रीराम त्रिपाठी**
4. **नया काव्य : नये मूल्य, डॉ. ललित शुक्ल**
5. **समकालीन कविता, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**
6. **शब्द और मनुष्य, डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव**
7. **आधुनिक हिन्दी काव्य का स्वरूप और विकास, डॉ.आशा किशोर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**
8. **नागार्जुन : एक अध्ययन, डॉ. ललित अरोड़ा**
9. **स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता, डॉ. अनंत मिश्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली**
10. **नया हिन्दी काव्य, डॉ. शिवकुमार मिश्र**
11. **छायावादोत्तर काव्य-संग्रह, संपादकव्दय-डॉ.रामनारायण शुक्ल तथा डॉ. श्रीनिवास पाण्डेय,प्रका.- संजय बुक सेन्टर, वाराणसी**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-4

MJRHIN-402 हिन्दी कथा साहित्य-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

कथा साहित्य के बारे में छात्रों को विधिवत एवं व्यापक जानकारी प्राप्त हो, इस उद्देश्य से हिंदी उपन्यास एवं कहानी विधा को रखा गया है।

इकाई -1 कमलेश्वर और उनका उपन्यास 'समुद्र में खोया हुआ आदमी'

1.1 कमलेश्वरः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.2 कमलेश्वर और उनके समकालीन उपन्यासकार

इकाई -2 'समुद्र में खोया हुआ आदमी'

2.1 कथ्य एवं शिल्प

2.2 समस्याएँ एवं उद्देश्य

इकाई -3 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' उपन्यास का तात्विक विश्लेषण

3.1 कथ्यगत विशेषताएँ

3.2 पात्रों की विशेषताएँ

3.3 कथोपकथन एवं संवाद

3.4 देशकाल और वातावरण (परिवेश)

3.5 भाषा शैली

3.6 उद्देश्य

इकाई -4 आधुनिक हिन्दी कहानी एवं कहानियाँ

1. **परदा- यशपाल**
2. **भोलाराम का जीव- हरिशंकर परसाई**
3. **जिन्दगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा**
4. **फेन्स के इधर और उधर- ज्ञानरंजन**

4.1 कथ्यगत विशेषताएँ

4.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

4.3 शिल्प विधान

4.4 भाषा-शैली

इकाई -5 पठित कहानियों की तात्विक समीक्षा

5.1 प्रमुख समस्याएँ

5.2 संवेदना, ऐतिहासिकता

5.3 आधुनिक भावबोध, व्यंग्य

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. काव्य के रूप, बाबू गुलाबराय
2. हिन्दी उपन्यास : एक अनंतयात्रा, (सं.) अशोक वाजपेयी
3. आठवें दशक के हिन्दी उपन्यास, रजनीकान्त जैन
4. उपन्यास : स्थिति और गति, डॉ. चंद्रकान्त बांदिवडेकर
5. हिन्दी उपन्यास और यर्थादवाद, डॉ. त्रिभुवन सिंह
6. मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, प्रा. उमा केवलराम
7. साठोत्तर हिन्दी उपन्यास और नगरबोध, डॉ. प्रिया नायक
8. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, विवेकीराय
9. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य (कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास), इन्द्रनाथ मदान
10. हिन्दी उपन्यास साहित्य में दाम्पत्य जीवन, डॉ. उर्मिला भटनागर
11. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प, डॉ. शोभा वबेरेकर
12. हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष, सं. रामदरश मिश्र
13. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति, देवीशंकर अवस्थी
14. कुछ कहानियाँ : कुछ विचार, विश्वनाथ त्रिपाठी

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-4

MJRHIN -403. हिन्दी साहित्य का इतिहास-11

(रीतिकाल)

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विभिन्न कालों, युगों, विचारधाराओं, वादों, शाखाओं आदि से छात्र सुपरिचित हों, इस उद्देश्य से हिंदी साहित्य के इतिहास का आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल पाठ्यक्रम में रखा गया है।

इकाई -1 रीतिकाल

1.1 रीतिः अर्थ, स्वरूप

1.2 रीतिकालीन विभिन्न परिस्थितियाँ

(दरबारी,ऐतिहासिक,सामाजिक,सांस्कृति,धार्मिक,साहित्यिक)

इकाई -2 रीतिकालीन धाराएः

2.1 रीतिबध्द काव्य

2.2 रीतिमुक्त काव्य

2.3 रीतिकालीन काव्य का स्वरूप

इकाई -3 रीतिबध्द काव्यधारा

3.1 प्रमुख कवि

3.2 प्रमुख प्रवृतियाँ

इकाई -4 रीतिमुक्त काव्यधारा

4.1 प्रमुख कवि

4.2 प्रमुख प्रवृतियाँ

इकाई -5 रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ

5.1 बिहारी, घनानंद, केशवदास

5.2 दयाराम सतसई, प्रवीणसागर, रामचंद्रिका

5.3 रीतिकालीन कविता का कला-पक्ष

संदर्भ ग्रंथ

1. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र**
2. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, बाबू गुलाबराय**
3. **हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, गणपतिचंद्र गुप्त**
4. **हिन्दी साहित्य का इतिहास, श्यामचंद्र कपूर**
5. **हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी**
6. **हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा**
7. **हिन्दी साहित्य युग एवं प्रवृत्तियाँ, डॉ. विजयपाल सिंह**
8. **हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, राजनाथ शर्मा**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-4

MJRHIN-404.हिन्दी नाट्य साहित्य-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

साहित्य में जितना महत्त्व पद्य का है, उतना ही गद्य साहित्य का भी है। आधुनिक काल में जहाँ कविता के क्षेत्र में कई मोड़ आए वहीं गद्य के क्षेत्र में विभिन्न नई विधाओं का विकास हुआ। नाटक और कहानी के क्षेत्र में कविता की ही भाँति कई मोड़ आए। नाटक दृश्य और श्रव्य दोनों का आस्वाद एक ही साथ कराता है, इसलिए 'काव्येषु नाटकम् रम्यम्' कहा है। भारतेन्दु से प्रारंभ होकर नाट्य विधा नए आयामों को छूते हुए आज जिस मुकाम पर है, उसका अध्ययन जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा विविध परिस्थितियों के साक्षात्कार हेतु सर्वथा अपेक्षित है।

इकाई -1 1.1 हिन्दी एकांकी साहित्य (सामान्य परिचय)

- 1.1 एकांकी : अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या
- 1.2 नाटक और एकांकी
- 1.3 एकांकी का तात्विक विश्लेषण

1.2 आधुनिक एकांकी का विकास

- 2.1 प्रमुख एकांकी तथा एकांकीकार
- 2.2 एकांकी के प्रमुख भेद
- 2.3 आधुनिक एकांकी की विशेषताएँ
- 2.4 अभिनय तथा रंगमंचीयता

इकाई -2 2.1 एकांकी : 1. सूखी डाली- उपेन्द्रनाथ अश्क ।

2. आवाज़ का नीलाम- धर्मवीर भारती

- 2.1 एकांकियों का कथ्य
- 2.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण
- 2.3 एकांकियों की कथ्यगत विशेषताएँ
- 2.4 एकांकियों का शिल्प : भाषा शैली

2.5 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

इकाई -3 3.1 एकांकी : 1. बाहर का आदमी- लक्ष्मीनारायण लाल ।
2. माँ- विष्णु प्रभाकर ।
1.1 एकांकियों का कथ्य
1.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण
1.3 कथ्यगत विशेषताएँ
3.2 एकांकियों का शिल्प :
2.1 भाषा-शैली
2.2 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

इकाई -4 4.1 एकांकी : 1. भोर का तारा- भुवनेश्वर
2. प्यालियाँ टूटती हैं- मोहन राकेश
1.1 एकांकियों का कथ्य
1.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण
1.3 कथ्यगत विशेषताएँ
4.2 एकांकियों का शिल्प
2.1 भाषा शैली
2.2 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

इकाई -5 5.1 एकांकी : 1. वे नाक से बोलते हैं- सुरेन्द्र वर्मा
1.1 एकांकियों का कथ्य
1.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण
1.3 कथ्यगत विशेषताएँ
5.2 एकांकियों का शिल्प
2.1 भाषा शैली
2.2 एकांकियों का तात्विक विश्लेषण

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. हिन्दी नाटक, डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य, रामजन्म शर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. समकालीन हिन्दी नाटककार, गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी नाटक और रंगमंच : पहचान और परख, इन्द्रनाथ मदान
5. समसामयिक हिन्दी नाटकों में चरित्र सृष्टि, जयदेव तनेजा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली

6. नाट्यभाषा, गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली
7. रंगदर्शन, नेमिचंद्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. हिन्दी एकांकी, सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. एकांकी और एकांकीकार, रामचरण महेन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. हिन्दी एकांकी- सिध्दनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-5

MJRHIN-501.हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

विद्यार्थी हिंदी साहित्य से तथा हिंदी साहित्य की प्रगति एवं विकास से परिचित हों, इस उद्देश्य से उन्हें हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के साहित्य की जानकारी देना आवश्यक हो जाता है।

इकाई -1 आधुनिक काल :

1.1 नामकरण

1.2 परिस्थितियाः

(राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक)

1.3 खड़ी बोली गद्य का प्रारंभिक स्वरूप

इकाई -2 भारतेन्दु युगः

2.1 पुनर्जागरण काल

2.2 भारतेन्दु युगीन पृष्ठभूमिः

(राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक)

2.3 भारतेन्दु युगीन काव्य-प्रवृत्तियाँ

2.4 भारतेन्दु युग के प्रमुख रचनाकार (कवि-लेखक)

2.5 भारतेन्दु कालीन गद्य का विकास

(नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध,पत्र-पत्रिकाएँ)

इकाई -3 व्दिवेदी युग

3.1 पृष्ठभूमि

3.2 व्दिवेदी युगीन काव्य-प्रवृत्तियाँ

3.3 व्दिवेदी युगीन प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ

3.4 व्दिवेदी युगीन गद्य साहित्य

(उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, जीवनी, पत्र-पत्रिकाएँ)

3.5 व्दिवेदी युग की प्रमुख कृतियाँ

इकाई -4 छायावाद

4.1 छायावादः नामकरण

4.2 छायावाद के प्रमुख कवि

4.3 छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

4.4 रहस्यवाद की परिभाषा

4.5 रहस्यवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

इकाई-5 प्रमुख रचनाकार और कृतियाँ

5.1 भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, प्रेमचंद, जैनेन्द्र, यशपाल

5.2 अन्धेर नगरी, कामायनी, साकेत, कुरुक्षेत्र, सरोज-स्मृति

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सृष्टि बुक डिस्ट्रिब्यूटर्स
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र
4. मध्यकालीन रासो साहित्य, भारती मधुकान्त वैद्य, के.के.वोरा, वोरा एण्ड कम्पनी
5. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, आचार्य प्रसाद द्विवेदी
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का आदिकाल, श्री नारायण चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय इतिहास कोश, डॉ. एस.एल.नागोरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
8. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा
9. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. हिन्दी साहित्य, धीरेन्द्र वर्मा, जगदीश गुप्त
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. सुधीन्द्र कुमार, अनीता श्रीवास्तव
12. इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. हिन्दी व्दितीय महासमरोत्तर साहित्य का इतिहास, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-5

MJRHIN-502.साहित्य के सिध्दांत और हिन्दी आलोचना-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

हिन्दी साहित्य के विधिवत अध्ययन के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों तथा हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है- विद्यार्थी में साहित्य के मर्म को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। इन समीक्षा सिद्धांतों के आलोक में उसके आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण संभव होता है तथा साहित्यिक समझ का विकास होता है।

इकाई -1 1. भारतीय काव्य शास्त्र

1.1 भारतीय काव्य शास्त्र के प्रमुख आचार्य

2. काव्य का स्वरूप

2.1 लक्षण तथा परिभाषा

2.2 काव्य के प्रयोजन

2.3 काव्य के हेतु

2.4 काव्य के प्रकार

2.5 काव्य के गुण

2.6 काव्य के दोष

इकाई -2 1. शब्द शक्ति

1.1 अभिधा के भेदोपभेद

1.2 लक्षणा के भेदोपभेद

1.3 व्यंजना के भेदोपभेद

2. काव्य संप्रदाय

2.1 रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि तथा अलंकार का सामान्य परिचय

इकाई -3 1. अलंकार

3.1.1 अलंकार का अर्थ, कार्य, प्रकार

3.1.2 शब्दालंकार का सामान्य परिचय

अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

2. अर्थालंकार का परिचय

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक,

3. छंद3.3.1 छंद की अवधारणा (गति, यति, मात्रा की गणना)

3.3.2 मात्रिक छंद का परिचय

दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला

4. वर्णिक छंद का सामान्य परिचय

वसन्ततिलका, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, सवैया

इकाई -4 प्रमुख हिन्दी आलोचक

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. डॉ. नंददुलारे बाजपेयी
4. डॉ. रामविलास शर्मा

इकाई -5 1.1 प्रमुख सिद्धांत और वाद

1.1 वैचारिक पृष्ठभूमि

1.2 मार्क्सवाद

2.1 मार्क्सवादी सिद्धांत

2.2 मार्क्सवादी समाजशास्त्र

2.3 प्रमुख विशेषताएँ

1.3 स्वच्छंदतावाद

3.1 अभिप्राय (अर्थ, स्वरूप और व्याख्या)

3.2 प्रमुख विशेषताएँ

1.4 मनोविश्लेषणवाद

4.1 फ्रायड का परिचय

4.2 मनोवैज्ञानिक पद्धति

4.3 मनोविश्लेषणवाद की शक्ति और सीमा

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद, डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. काव्यशास्त्र : डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

3. काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
4. सिद्धांत और अध्ययन : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
5. साहित्यशास्त्र : डॉ, ओम प्रकाश गुप्त, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : योगेन्द्र प्रताप सिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. हिन्दी आलोचना : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. हिन्दी आलोचना का विकास : नन्दकिशोर नवल

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-5

MJRHIN-503.विशेष साहित्यकार का अध्ययन-1

भीष्म साहनी

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

स्नातक कक्षा की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे किसी ऐसे विशिष्ट साहित्यकार के समग्र साहित्य की भी जानकारी प्राप्त करें, जिनका चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में तो विशिष्ट योगदान रहा ही हो; साथ ही, उनके लेखन की प्रासंगिकता भी वर्तमान संदर्भ में हो।

1. **झरोखे (उपन्यास)**
2. **कबीरा खड़ा बजार में (नाटक)**
3. **मेरी प्रिय कहानियाँ (कहानी-संग्रह)**

इकाई -1 1. प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास (सामान्य परिचय)

1.1 मनोवैज्ञानिक उपन्यास

1.2 सामाजिक चेतना से अनुप्राणित उपन्यास

1.3 ऐतिहासिक उपन्यास

1.4 आंचलिक उपन्यास

1.5 आधुनिकता बोध के उपन्यास

1.6 प्रयोगशील उपन्यास

2. भीष्म साहनी: साहित्यिक परिचय

इकाई -2 उपन्यासकार भीष्म साहनी

1. झरोखे

1.1 बाल मनोविज्ञानः अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

1.2 झरोखेः कथ्य

इकाई -3 झरोखे : शिल्प विधान

1. भाषा

2. शैली
3. उपन्यास की विशेषताएँ

इकाई -4 प्रेमचन्दोत्तर कहानी (सामान्य परिचय)

1. समाजवादी या प्रगतिवादी कहानी
2. व्यक्तिवादी कहानी
3. नई कहानी
4. सचेतन कहानी
5. आंचलिक कहानी
6. आधुनिकता बोध से अनुप्राणित कहानी
7. स्वातंत्र्योत्तर महिला कहानी लेखन

इकाई -5 कहानीकार भीष्म साहनी

1. कहानियाँ-
   1.1 वाड्चू
   1.2 अमृतसर आ गया है
   1.3 समाधि भाई रामसिंह
2. कहानियों का तात्विक अध्ययन
3. कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भीष्म साहनीःव्यक्ति और रचना-राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, वाणी प्रका., दिल्ली।
2. भीष्म साहनीःउपन्यास साहित्य-विवेक व्दिवेदी, वाणी प्रका., दिल्ली।
3. साहित्य के नये धरातल : शंकाएँ और दिशाएँ, कुमार केसरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाट्य- रामजन्म शर्मा, लोकभारती प्रका., इलाहाबाद।
5. समकालीन हिन्दी नाटककार-गिरीश रस्तोगी, इन्द्रप्रस्थ प्रका., दिल्ली।
7. मानव मूल्य और साहित्य, धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी

वैकल्पिक विषय

गूजरात विद्यापीठ

महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-5

MJRHIN -504.प्रयोजनमूलक हिन्दी-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

आधुनिक काल में हिंदी भाषा के विविध प्रयोजनमूलक रूप पनपे है जिनमें राजभाषा या कार्यालयी हिंदी, विधि की हिंदी, पत्रकारिता की हिंदी आदि विविधक्षेत्र शामिल हैं। छात्र प्रयोजनमूलक हिंदी को समझें तथा उनमें इस संबंध में समझ विकसित हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रयोजनमूलक हिंदी प्रश्नपत्र रखा गया है।

इकाई -1 हिन्दी भाषा की व्यवस्था और उसका मानकीकरण

- **1.1 हिन्दी भाषा का स्वरूप : मौखिक और लिखित भाषा**
- **1.2 लिपि से अभिप्राय तथा वर्तनी का मानक रूप**
- **1.3 हिन्दी भाषा का मानकीकरण, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और हिन्दी का आधुनिकीकरण**
- **1.4 हिन्दी भाषा के विभिन्न रूप : सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी**

इकाई -2 प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा और उसकी परिव्याप्ति

- **2.1 प्रयोजनमूलक हिन्दी से अभिप्राय और उसकी परिव्याप्ति**
- **2.2 प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रयुक्तियाँ और उसके प्रयोगात्मक क्षेत्र**
- **2.3 कार्यालयीन हिन्दी के प्रमुख कार्य-**
  प्रारुपण, पत्रलेखन, टिप्पण
- **2.4 पत्राचार- कार्यालयी पत्र, व्यावसायिक पत्र, व्यावहारिक पत्र**

इकाई -3 3.1 जनसंचार माध्यमः अभिप्राय, स्वरूप और

- **3.2 जनसंचार माध्यमों के प्रकार**
- **3.3 जनसंचार माध्यमों की भाषिक प्रकृति**
- **3.4 समाचार लेखन और हिन्दी**
- **3.5 संवाद लेखन और हिन्दी**

इकाई-4 स्वाध्याय और परिसंवाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. कृष्णकुमार शर्मा
3. इलेक्ट्रोनिक मीडिया, डॉ. सुधीर सोनी, युनि.पब्लिकेशन, जयपुर
4. हिन्दी व्याकरण, पं.कामताप्रसाद
5. प्रयोजनमूलक भाषा और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. प्रमाणिक आलेखन और टिप्पण, प्रो. विराज, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
8. प्रशासनिक एवं कार्यालयी हिन्दी, डॉ. रामप्रकाश एवं डॉ. गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. प्रारूपण, टिप्पण, प्रूफपठन, भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. हिन्दी : विविध व्यवहारों की भाषा, सुवास कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. प्रयोजनमूलक हिन्दीः प्रस्तुति और अनुवाद- माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक विषय

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-5

MJRHIN-504.हिन्दी पत्रकारिता-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

पत्रकारिता आज जीवन-समाज की धड़कन बन गई है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिन्ट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

इकाई-1 पत्रकारिता

1.1 पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार

1.2 पत्रकारिता का उद्भव और विकास

1.3 समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व-

1.4 समाचार संकलन तथा लेखन के आयाम

इकाई-2 संपादन कला के सामान्य सिध्दांत

2.1 शीर्षकीकरण, पृष्ठविन्यास, आमुख और समाचार पत्र की प्रस्तुती कला

2.2 समाचार पत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना

2.3 दृश्य-सामग्री की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता

इकाई-3 समाचार के विभिन्न स्रोत

3.1 संवाददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्य पध्दति

3.2 पत्रकारिता संबंधित लेखन-

3.3 संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार की प्रविधि और व्यवहार

3.4 विज्ञापन के लाभ तथा हानि

इकाई-4 स्वाध्याय और परिसंवाद

संदर्भ ग्रन्थ

1.पत्रकारिताः विविध विधाएँ- डॉ. राजकुमारी रानी, जयभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2.समाचार पत्र प्रबंधन- डॉ. गुलाब कोठारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3.समाचार संपादन- कमलदीक्षित, महेश दर्पण, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4.फीचरलेखनः स्वरूप और शिल्प- डॉ. मनोहर प्रभाकर,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5.मीडिया और बाज़ारवाद- संपादक रामशरण जोशी,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
6.हिन्दी पत्रकारिताः स्वरूप और संदर्भ- विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7.राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता- मीरा रानी बल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8.पत्रकारिता के उत्तर आधुनिक चरण- कृपाशंकर चौबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
9.समाचार पत्रों की भाषा- माणिक मृगेश, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
10.हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार-डॉ. ठाकुर दत्त आलोक, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-5

MJRHIN-505.प्रादेशिक भाषा साहित्य-1

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

भारत बहुभाषा भाषी देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में संप्रति 22 प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ये सब हिन्दी की भगिनी भाषाएँ हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं में अद्‌भुत साम्य है। इन सबके सर्वांग परिचय द्‌वारा ही अखंड भारतीयता और एक समेकित भारतीय साहित्य की अवधारणा फलीभूत हो सकती है। हिन्दीतर राज्य के हिन्दी के विद्‌यार्थियों से अपेक्षित है कि वे हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर अपनी प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य का भी सामान्य परिचय अर्जित करें :

(क) भाषा का इतिहास,

(ख) साहित्य का इतिहास, और

(ग) रचनाकार और उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ।

व्याख्या एवं विवेचन के लिए 3 प्रतिनिधि रचनाकारों की रचनाएँ, कहानियाँ आदि का चयन विभाग द्‌वारा इस दृष्टि से किया जाएगा कि छात्र प्रथम सत्र में - नरसिंह, उमाशंकर जोशी, रघुवीर चौधरी और गुजरात के प्रसिध्द कहानीकारों की गुजराती कहानी का परिचय प्राप्त कर सकें ताकि यहाँ का विद्‌यार्थी प्रादेशिक गुजराती साहित्य की विविध गतिविधियों से परिचित हो सकें।

इकाई -1 गुजराती साहित्य का इतिहास :
परिचय एवं प्राचीन गुजराती साहित्य के स्वरूपों की चर्चा
1.1 मध्यकालीन साहित्य के प्रेरक बल
1.2 मध्यकालीन साहित्य की विशेषताएँ
1.3 आधुनिक काल की साहित्यिक विशेषताएँ

इकाई -2 नरसिंह
2.1 व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय
2.2 प्रमुख पदों की संदर्भ सहित व्याख्या
2.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -3 उमाशंकर जोशी

3.1 व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय

3.2 प्रमुख कविताओं की संदर्भ सहित व्याख्या

3.3 काव्यगत विशेषताएँ

इकाई -4 4.1 गुजरात के विशिष्ट कहानीकार

1. रघुवीर चौधरी
2. धूमकेतु
3. सरोज पाठक
4. वर्षा अडालजा

4.2 व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय

इकाई -5 5.1 प्रमुख कहानिय़ों का कथ्य एवं शिल्प

5.2 कहानियों की कथ्यगत विशेषताएँ

5.3 स्वाध्याय एवं परिसंवाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1 नरसिंह ना पद, जयंत कोठारी, गुर्जर प्रकाशन

2 उमाशंकर जोशीनी कविता (चयन), (सं.) भोलाभाई पटेल, गुजरात साहित्य अकादमी

3 मध्यकालीन गुजराती साहित्य नो इतिहास, अनंतराय म. रावल, गुर्जर प्रकाशन

4 अर्वाचीन गुजराती साहित्य नी विकासरेखा, धीरूभाई ठाकर, गुर्जर प्रकाशन

5 अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास,डॉ.रमेश एम.त्रिवेदी,आदर्श पुस्तक भंडार,अहमदाबाद

6 रघुवीर चौधरी नी टूंकी वार्ता, रघुवीर चौधरी, रंगद्वार प्रकाशन, अहमदाबाद

7 नरसिंह मेहता, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

8 रघुवीर चौधरी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

9 साधना-साहित्य वारसो(कहानियाँ), दिपोत्सवी विशेषांक, अक्तूबर-2009

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-6

MJRHIN-601.हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों को आधुनिक काल की सही समझ देना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न वादों को रखा गया है।

इकाई-1 आधुनिक काल

1.1 नामकरण

1.2 परिस्थितियाँ-

(राजनीतिक, आर्थिक, शिक्षा का पश्चिमीकरण, यातायात, प्रेस, भारतीय नवजागरण)

1.3 आधुनिकता का स्वरूप

इकाई -1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता

1.1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता की प्रवृत्तियाँ-

1.1 प्रगतिवादः

(अ) अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

(ब) प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(क) प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

इकाई-2 प्रयोगवादः

(अ) अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

(ब) प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(क) प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

इकाई-3 नई कविता : स्वरूप एवं संवेदना

(अ) प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(ब) प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

इकाई-4 साठोत्तरी हिन्दी कविताः

(अ) अर्थ, स्वरूप एवं व्याख्या

(ब) प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(क) प्रमुख रचनाएँ एवं रचनाकार

इकाई-5 स्वातंत्र्योत्तर कालीन विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-

5.1 विभन्न चेतनाएँ- दलित, नारीवाद, आदिवासी आदि

5.1 उपन्यास, कहानी, नाटक

5.2 उपरोक्त विधाओं के प्रकार-

(मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आंचलिक, दलित, नारीवादी, आदिवासी)

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता, डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह, प्राश्र्व प्रकाशन, अहमदाबाद
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सृष्टि बुक डिस्ट्रिब्यूटर्स
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र
4. हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास, आचार्य हजारीप्रसाद द्‌विवेदी
5. भारतीय इतिहास कोश, डॉ. एस.एल.नागोरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिवकुमार शर्मा
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. हिन्दी साहित्य, धीरेन्द्र वर्मा, जगदीश गुप्त
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. सुधीन्द्र कुमार, अनीता श्रीवास्तव
10. इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
11. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहासः बच्चनसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
12. भारतीय साहित्य और आदिवासी विमर्शः माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
13. हिन्दी दलित साहित्यः एक मूल्यांकन-प्रमोद कोवप्रत, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
14. उत्तर-आधुनिकतावाद और दलित साहित्य-कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिंदी सेमेस्टर-6

MJRHIN-602.साहित्य के सिध्दांत और हिन्दी आलोचना-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

हिन्दी साहित्य के विधिवत् अध्ययन के लिए भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों तथा हिन्दी आलोचना की विविध प्रणालियों का ज्ञान प्राप्त करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है - विद्यार्थी में साहित्य के मर्म को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। इन समीक्षा सिद्धांतों के आलोक में उसके आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण संभव होता है तथा साहित्यिक समझ का विकास होता है।

इकाई -1 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

पाश्चात्य समीक्षा का उद्भव और विकास

1.1 यूनानी और लैटिन समीक्षा से पुनर्जागरण युग तक

स्वच्छन्दतावादी समीक्षा

बीसवीं शती की समीक्षा

2. पाश्चात्य समीक्षा के उपकरण

1.2.1 वस्तुवादी : सामान्य परिचय

1.2.2 कलावादी : सामान्य परिचय

2.1 बिम्बः अर्थ, बिंबों का वर्गीकरण, बिम्ब का महत्व

2.2 प्रतीकः अर्थ, प्रतीक का वर्गीकरण, प्रतीक का महत्व

2.3 मिथकः उद्भव, अर्थ एवं व्याख्या, मिथकों की उपादेयता

इकाई -2 प्लेटो

1. प्रस्तावना : प्लेटो पूर्व युग की देन

2. प्रेरणा, अनुकरण तथा विरेचन सिद्धांत का पूर्व रूप

3. प्लेटो के काव्य विषयक सिद्धांत

3.1 अनुकरण

3.2 विरेचन

3.3 काव्य सत्य

इकाई -3 वर्ड्सवर्थ

1. **वर्ड्सवर्थ का युग और परिस्थितियाँ**
2. **वर्ड्सवर्थ के विचार (काव्य और भाषा संबंधी)**
3. **काव्य की परिभाषा (वर्ड्सवर्थ के अनुसार)**
4. **वर्ड्सवर्थ का प्रदान**

इकाई -4 मैथ्यू आर्नल्ड

1. **मैथ्यू आर्नल्ड का परिचय**
2. **काव्य विषयक सिद्धांत**
3. **काव्य के समीक्षा संबंधी विचार**
4. **साहित्य में समीक्षा का महत्व**
5. **मैथ्यू का योगदान**

इकाई -5 आई. ए. रिचर्डस

1. **परिचय**
2. **काव्य और विज्ञान**
3. **काव्य विषयक सिद्धांत**
4. **संप्रेषण का सिद्धांत**
5. **रिचर्ड्स का योगदान**

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद, डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**
2. **काव्यशास्त्र : डॉ. भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी**
3. **काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली**
4. **सिद्धांत और अध्ययन : बाबू गुलाबराय, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली**
5. **साहित्यशास्त्र : डॉ, ओम प्रकाश गुप्त, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद**
6. **भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, योगेन्द्र प्रताप सिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**
7. **हिन्दी आलोचना, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली**
8. **हिन्दी आलोचना का विकास, नन्दकिशोर नवल**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-6

MJRHIN-603.विशेष साहित्यकार का अध्ययन-11

भीष्म साहनी

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

स्नातक कक्षा की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वे किसी ऐसे विशिष्ट साहित्यकार के समग्र साहित्य की भी जानकारी प्राप्त करें, जिसका चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में तो विशिष्ट योगदान रहा ही हो; साथ ही, उसके लेखन की प्रासंगिकता भी वर्तमान संदर्भ में हो।

1. **झरोखे (उपन्यास)**
2. **कबीरा खड़ा बजार में (नाटक)**
3. **प्रतिनिधि मेरी प्रिय कहानियाँ (कहानी-संग्रह)**

इकाई -1 प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक (सामान्य परिचय)

1. **आधुनिक भावबोध से सम्पृक्त नाटक**
2. **रंगमंचीय नाटक**
3. **साठोत्तरी ऐतिहासिक और सामाजिक नाटक**
4. **प्रयोगधर्मी नाटक**

इकाई -2 1. 'कबीरा खड़ा बजार में'

1. **कथ्य**
2. **पात्र एवं चरित्र चित्रण**

इकाई -3 'कबीरा खड़ा बजार में' (कथ्यगत विशेषताएँ)

1. **मूल्य टकराव**
2. **जीवन में मर्यादा एवं सत्य की महत्ता**
3. **युगबोध की व्यापकता**
4. **वैयक्तिक जीवनादर्श**
5. **राजनीतिक जीवनादर्श**
6. **नारी के प्रति रचनाकार का दृष्टिकोण**

इकाई -4 कबीरा खड़ा बजार में शिल्प-विधान

1. गीत योजना
2. मिथकत्व
3. भाषाशैली
4. रंगमंचीयता
5. शिल्पगत विशेषताएँ

इकाई -5 5.1 कहानियाँ

1. गंगो का जाया
2. सिफारिशी चिट्ठी
3. चीफ की दावत

5.2 कहानियों का कथ्य एवं शिल्प

5.3 कहानियों का तात्विक अध्ययन

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. भीष्म साहनीः व्यक्ति और रचना- राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. साहित्य के नये धरातल, शंकाएँ और दिशाएँ- कुमार केसरी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. मानव मूल्य और साहित्य- धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी
4. भीष्म साहनीः उपन्यास साहित्य- विवेक व्दिवेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. भीष्म साहनी- श्याम कश्यप, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. दृश्य-अदृश्य (नाट्य विमर्श)- नेमिचन्द्र जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. हिन्दी नाटकः रंग शिल्प दर्शन- विकल गौतम, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक विषय

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-6

MJRHIN-604.प्रयोजनमूलक हिन्दी-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

आधुनिक काल में हिंदी भाषा के विविध प्रयोजनमूलक रूप पनपे है जिनमें राजभाषा या कार्यालयी हिंदी, विधि की हिंदी, पत्रकारिता की हिंदी आदि विविधक्षेत्र शामिल हैं। छात्र प्रयोजनमूलक हिंदी को समझें तथा उनमें इस संबंध में समझ विकसित हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रयोजनमूलक हिंदी प्रश्नपत्र रखा गया है।

इकाई -1 हिन्दी का वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप

- 1.1 वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्राद्योगिकी क्षेत्रो में हिन्दी
- 1.2 हिन्दी की वैज्ञानिकी एवं तकनीकी शब्दावली
- 1.3 हिन्दी कम्प्यूटिंग
- 1.4 हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन
- 1.5 भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का भविष्य

इकाई -2 हिन्दी के समक्ष जनसंचार एवं चुनौतियाँ

- 2.1 जनसंचार माध्यमों का स्वरूप- दृश्य, श्रव्य, इन्टरनेट
- 2.2 रेडियो लेखन और हिन्दी
- 2.3 विज्ञापन लेखन
- 2.4 विज्ञापन लेखन की प्रविधि

इकाई -3 संपादन-कला के सिध्दांत

- 3.1 अशुध्दि-शोधन
- 3.2 प्रूफ पठन
- 3.3 अनुवाद की अवधारणा और उसका महत्व

इकाई-4 स्वाध्याय और परिसंवाद

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. राम गोपाल सिंह, प्रकाशन, अहमदाबाद
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. कृष्णकुमार शर्मा
3. इलेक्ट्रोनिक मीडिया, डॉ. सुधीर सोनी, युनि.पब्लिकेशन, जयपुर
4. हिन्दी व्याकरण, पं.कामताप्रसाद
5. प्रयोजनमूलक भाषा और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह
6. प्रयोजनमूलक हिन्दी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. प्रमाणिक आलेखन और टिप्पण, प्रो. विराज, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
8. प्रशासनिक एवं कार्यालय हिन्दी, डॉ. रामप्रकाश एवं डॉ. गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. प्रारूपण, टिप्पण, प्रूफपठन, भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. हिन्दी: विविध व्यवहारों की भाषा, सुवास कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. हिंदी कंप्यूटिंग, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद
12. कंप्यूटर के विविध आयाम, डॉ. राम गोपाल सिंह, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद

वैकल्पिक विषय

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-6

MJRHIN-604.हिन्दी पत्रकारिता-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

पत्रकारिता आज जीवन-समाज की धड़कन बन गई है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिन्ट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

इकाई -1 हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास

1.1 व्दिवेदी युगीन पत्र-पत्रिकाएँ

1.2 भारतेन्दु युगीन पत्र-पत्रिकाएँ

इकाई -2 हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम

2.1 समाचार लेखन कला

2.2 समाचार के आधारभूत तत्व

इकाई -3 संपादकीय लेखन

3.1 साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस-प्रबंधन

3.2 प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

इकाई -4 इलैक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता

4.1 रेडियो, टी.वी., वीडियो, केबल, और इन्टरनेट की पत्रकारिता

4.2 प्रूफशोधन, ले.आउट तथा पृष्ठ-सज्जा

4.3 पत्रकारिता का प्रबंधन-प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण-व्यवस्था

इकाई-4 स्वाध्याय और परिसंवाद

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. **हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य, डॉ. रामअवतार शर्मा, नमन प्रकाशन**
2. **टी.वी. रेडियो: समूह माध्यम, हसमुख बाराडी, नवभारत साहित्य मंदिर**
3. **समाचार लेखन, पी.के. आर्य, विद्या विहार**
4. **राजभाषा हिन्दी, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली**
5. **इलेक्ट्रोनिक मीडिया: डॉ. सुधीर सोनी, युनि.पब्लिकेशन, जयपुर**
6. **दूरदर्शनः हिन्दी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग,कृष्णकुमार रत्तू,भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली**
7. **जनसंचार माध्यमः चुनौतियाँ और दायित्व,सं.त्रिभुवनराय,भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली**
8. **संचार क्रांति और हिन्दी पत्रकारिता,सं.अशोक कुमार शर्मा,भारतीय ग्रंथ निकेतन,नई दिल्ली**
9. **जनसंचार: विविध आयाम, सं. बृजमोहन गुप्त, तक्षशिला, नई दिल्ली**
10. **जनसंचार माध्यम और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह, विनय प्रकाशन, अहमदाबाद**
11. **पत्रकारिता प्रशिक्षण, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद**
12. **हिंदी में मीडिया लेखन और अनुवाद, डॉ. राम गोपाल सिंह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद**

गूजरात विद्यापीठ
महादेव देसाई ग्रामसेवा संकुल,सादरा

बी.ए.(स्नातक),हिन्दी सेमेस्टर-6

MJRHIN-605.प्रादेशिक भाषा साहित्य-11

कुल घंटे-60 **कुल क्रेडिट-04**

भारत बहुभाषा भाषी देश है। संविधान की आठवीं अनुसूची में संप्रति 22 प्रादेशिक भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। ये सब हिन्दी की भगिनी भाषाएँ हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी भारतीय भाषाओं में अद्‌भुत साम्य है। इन सबके सर्वांग परिचय द्‌वारा ही अखंड भारतीयता और एक समेकित भारतीय साहित्य की अवधारणा फलीभूत हो सकती है। हिन्दीतर राज्य के हिन्दी के विद्‌यार्थियों से अपेक्षित है कि वे हिन्दी भाषा और साहित्य के साथ-साथ निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर अपनी प्रादेशिक भाषा में रचित साहित्य का भी सामान्य परिचय अर्जित करें :

(क) भाषा और साहित्य का इतिहास

(ख) रचनाकार और उनकी रचनाएँ

व्याख्या एवं विवेचन के लिए 03 प्रतिनिधि रचनाकारों की रचनाएँ, कहानियाँ आदि का चयन विभाग द्‌वारा इस दृष्टि से किया गया है। व्दितीय सत्र में गुजरात के साहित्तयकार पन्नालाल पटेल, न्हानालाल पटेल और झवेरचंद मेघाणी आदि का परिचय प्राप्त कर सकें।

इकाई -1 अर्वाचीन गुजराती साहित्य

1.1 अर्वाचीन गुजराती साहित्य का युग-विभाजन

1.2 सुधार युगीन साहित्य की विशेषताएँ

इकाई-2 पन्नालाल पटेलः व्यक्तित्व-कृतित्व

2.1 पन्नालाल पटेल का 'मळेला जीव'(उपन्यास)

2.1.1 मळेला जीव का कथ्य और शिल्प

2.1.2 मळेला जीव की कथ्यगत विशेषताएँ

इकाई -3 न्हानालालः व्यक्तित्व और कृतित्व

3.1 कुरुक्षेत्र (महाकाव्य)

3.2 महाकाव्य के लक्ष्ण

3.3 कुरुक्षेत्र का कथ्य एवं शिल्प

3.4 मिथक काव्य के रूप में कुरुक्षेत्र का मूल्यांकन

इकाई -4 झवेरचंद मेघाणीः व्यक्तित्व-कृतित्व

4.1 मेघाणी की साहित्यिक विशेषताएँ

4.2 कहानीकार मेघाणी

इकाई -5 5.1 स्वातंत्र्योत्तर गुजराती की प्रमुख कहानियाँ-

5.1.1 दीकरो -झवेरचंद मेघाणी

5.1.2 अबु मकराणी -चुनीलाल मड़िया

5.1.3 इतरा -हिमांशी शेलत

5.1.4 कहेवानी बाकी रही गएली वात -हिमांशी शेलत

5.2 कहानियों का कथ्य और शिल्प

5.3 कहानियों की कथ्यगत विशेषताएँ

<u>संदर्भ ग्रंथ</u>

1. 'मळेला जीव' भारतना गौरवग्रंथ में संकलित संपादक-डॉ.चन्द्रकान्त मेहता, प्रका. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
2. अर्वाचीन गुजराती साहित्यनो इतिहास-डॉ. रमेश एम. त्रिवेदी, आदर्श प्रकाशन, अहमदाबाद
3. भारतीय साहित्यना निर्माताः पन्नालाल पटेल-रघुवीर चौधरी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
4. न्हानालालः शताब्दी ग्रन्थ-प्रका. गुजरात युनि., अहमदाबाद
5. कविवर्य न्हानालाल- रावल अनंतराय एम., महाकवि न्हानालाल स्मारक ट्रस्ट, अहमदाबाद
6. कविवर्णी प्रतिभा अने कुरुक्षेत्र विवेचन-परीख रसिकलाल सी. न्हानालाल स्मारक ट्रस्ट, अहमदाबाद
7. झवेरचंद मेघाणीः जीवन अने साहित्य- पाठक जयंत, पोपुलर प्रका., सुरत
8. चुनीलाल मड़ियाः एक अभ्यास- मड़िया अमिताभ, नवभारत साहित्य मंदिर, अहमदाबाद
9. वार्ता विशेष हिमांशी शेलत- शरीफा विजळीवाळा, अरुणोदय प्रका.,अहमदाबाद